Chap-6

अध्याय षष्ठम्

प्रसाद काव्य में बिंब विधान

ऐन्द्रिय आधार पर बिम्ब के भेद

चाक्षुष बिंब

श्रावण बिंब

स्पर्श बिंब

घ्राण बिंब

रसना बिंब

मौलिक बिंब विधान की दृष्टि से बिंब के भेद

शब्द बिंब

वर्ण बिंब

समानुभूतिक बिंब

व्यंजनाप्रवण सामासिक बिंब

प्रसृत बिंब

अन्य आधारों पर बिंब के भेद

सज्जात्मक बिंब

उदात्त बिंब

संवेदनात्मक बिंब

वस्तुप्रधान बिंब

घनात्मक बिंब

विस्तारप्रधान बिंब

नाद प्रधान बिंब

प्रसाद काव्य में बिंब विधान

प्रसाद काव्य में बिंब विधान का अपना एक विशेष महत्व है । पाठक भूल ही जाता है कि वह कविता पढ़ रहा है या चित्र देख रहा है । स्वाभाविक रमणीयता इनके बिंबों की मुख्य विशेषता है । इनके बिंब अधिकतर मनुष्य और प्रकृति से सम्बंधित हैं । डॉ० केदारनाथ सिंह के मतानुसार-'प्रसाद जी के सर्वोत्तम बिंब या तो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुषंगों को जगाने वाले हैं या फिर रूमानी भावना और स्वच्छन्द कल्पना वृत्ति को उदित करने वाले । उनके बिंबों में क्षणिक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति उतनी नहीं है जितनी स्मृतियों की । उनके बिंब विधान की इस विलक्षणता का रहस्य उनके शब्दों के प्राचीन सन्दर्भों में ढूँढ़ा जा सकता है ।'[1] इसी प्रकार डॉ० महेन्द्रनाथ राय लिखते हैं -'प्रसाद अतीत के प्रति विशेष रागोन्मुख रहे हैं, फलस्वरूप इनके बिंब में अतीत का गाढ़ा रंग विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है । ऐन्द्रिजालिक सौन्दर्य की प्रगाढ़- ऐन्द्रिय अनुभूति इनकी प्रमुख विशेषता है । वे मूलत: प्रेम और सौन्दर्य के कवि रहे हैं, अतएव, इनके बिंबों में अनुभूति की गहनता का सहज स्फूर्त प्रवाह विशेष रूप से द्रष्टव्य है । प्रसाद में मानस बिंबों के प्रति भी विशेष आग्रह रहा है । उन्होंने अधिकांश स्थलों पर भाव सौंदर्य को चित्रीत करने का प्रयत्न भी किया है ।'[2] चूँकि बिंब मुख्यता इन्द्रियों का विषय है । इसीलिए बिंब में ऐन्द्रिय आधार प्रमुख होता है । ऐन्द्रिय आधार पर बिंबों का वर्गीकरण करना अधिक औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है । इस आधार पर बिंब का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

(१) चाक्षुष बिंब

(२) श्रावण बिंब

(३) स्पर्श बिंब

(४) घ्राण बिंब

(५) रसना बिंब

(१) चाक्षुष बिंब :

चाक्षुष ( ) से अभिप्राय है ' जो नेत्रों का विषय हो । ' जितनी भी वस्तुएँ रूप और आकार से संबद्ध होती हैं उन सब का बोध चक्षु से होता है । वैसे तो सभी इन्द्रियों का अपना ही महत्व होता है परन्तु चक्षु का तो मनुष्य जीवन में विशेष महत्व है । चाक्षुष बिंब का सम्बंध चक्षुओं से है । इस प्रकार के बिंबों का उपयोग स्थूल सौंदर्य के चित्रण के लिए किया जाता है । प्रसाद जी के काव्य में इसके सुन्दर उदाहरण मिलते हैं -

और उस मुख पर वह मुसक्यान ।
रक्त किसलय पर ले विश्राम ;
अरूण की एक किरण अम्लान
अधिक अलसाई हो अभिराम ।[3]

इन पंक्तियों को पढ़ते ही हमारी चेतना में श्रद्धा के ( ) स्निग्ध गुलाबी अधरों पर विद्यमान हल्की सी मुस्कान का रूप अंकित ( ) हो जाता है वह ऐसी जान पड़ती है, जैसे लालिमा युक्त कोंपल पर अरूणोदय की कोई रमणीय उज्ज्वल किरण अलसाकर विश्राम करने लगी है । 'रक्त किसलय' अधरों की रक्तिमता के लिए 'अरूण की अम्लान किरण' मुस्कान की उज्ज्वल रेखा के लिए प्रयुक्त हुई है ।

किरण । तुम क्यों बिखरी हो आज, रंगी हो तुम किसके अनुराग,

--- --- ---

अरूण शिशु के मुख पर सविलास,सुनहली लट घुँघराली कान्त,

कोकनद मधु धारा-सी तरल, विश्व में बहती हो किस ओर ?

सुदिन मणि-वलय विभूषित उषा- सुन्दरी के कर का संकेत ।[४]

यहाँ पर किरण के ~~क्रम-किस्म~~ विभिन्न रूपों का वर्णन बिंब के द्वारा किया गया है।

वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
उषा बटोरती अरूण गात ।[५]

उषा की लालिमा चारों ओर फैल गयी है। सूर्योदय हो चुका है। अत: सूर्य की सुषमा के फलस्वरूप पृथ्वी पर पड़े हुए समस्त ओस के कण अब भाप बनकर उड़ चुके हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे रमणी रात भर रोकर चली गयी है और उसके आँसू बिखरे रह गये हैं। यहाँ उस सुन्दरी का बिंब उभर कर आता है जो आँसुओं को बटोर रही है।

सरसों के पीले- कागज पर वसन्त की आज्ञा पाकर ।
गिरा दिये वृक्षों ने सारे पत्ते अपने सुखला कर ।।
खड़े देखते राह नये कोमल किसलय की आशा में ।
परिमलपूरित पवन-कंठ से, लगने की अभिलाषा में ।।[६]

प्रस्तुत पंक्तियों में प्रसाद जी ने वृक्ष का वर्णन किया है जिसके पत्ते सूख कर गिर चुके हैं। पत्तों के गिर जाने से उसकी दशा बड़ी ही विचित्र प्रकार की हो गई है। यहाँ पर उस व्यक्ति का बिंब उभरता है जिसने प्रियतम

से मिलने की आशा में अपना सब कुछ किसी को दे दिया हो और रिक्त होकर शीतल आलिंगन की अभिलाषा में बड़ी ही आशा के साथ प्रिय की राह एकटक देख रहा हो ।

शशि-मुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाये
जीवन की गोधूली में
कौतूहल से तुम आये ।[७]

मानस में उस चन्द्रमुखी नारी का बिंब उभरता है जो संध्याकाल के समय अपने मुख पर घूँघट डाल कर आंचल की ओट में दीप जलाकर आलोक बिखेर रही हो ।

किंजल्क जाल हैं बिखरे
उड़ता पराग है रूखा
है स्नेह सरोज हमारा
विकसा, मानस में सूखा ।[८]

इन पंक्तियों में उस सूखे हुए कमल का बिंब उभरता है जो मुरझाया हुआ है और केशल जाल इधर- उधर बिखर गया है और उसका सूखा पराग चारों ओर उड़ रहा है ।

वह अगला समतल जिस पर
है देवदारु का कानन ;
घन अपनी प्याली भरते
ले जिसके दल से हिमकन ।[९]

पर्वत प्रदेश में देवदारू के ऊँचे- ऊँचे वृक्ष उगे हुए हैं। कवि कल्पना करता है जैसे देवदारू के पत्तों से ओस की बूंदे पान करके बादल अपने पात्र भर रहे हैं। यहाँ पर उस व्यक्ति का बिंब प्रस्तुत हो जाता है जो पत्तों पर पड़े हुए ओस कणों से अपनी प्याली भर रहा है।

काली आँखों में कितनी
यौवन के मद की लाली
मानिक -मदिरा से भर दी
किसने नीलम की प्याली। [१०]

यहाँ पर बहुत ही सुन्दर बिंब की व्यंजना हुई है। प्रिय की आँखें काली- काली हैं। उन आँखों में यौवन की मादकता व्याप्त है, जिसके कारण वे लाल-लाल दिखाई पड़ती हैं अर्थात् यौवन के कारण इन काली आँखों में मस्ती और अनुराग के लाल-लाल डोरे खिंचे हुए हैं। इन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे नीलम की बनी हुई प्याली में किसी ने माणिक्य के रंग की लाल मदिरा भर दी हो। आँखों के सामने उस मदिरा से भरे हुए ~~मल~~ प्याले का चित्र प्रस्तुत हो जाता है।

लहरों में यह क्रीड़ा- चंचल,
सागर का उद्वेलित अंचल।
है पोंछ रहा आँखें छलछल,
किसने यह चोट लगाई है? [११]

मानस में उस सागर का बिंब उभर आता है जिसमें लहरें बार- बार उठती गिरती छल-छल की ध्वनि कर रही हैं। लहरें उसके वस्त्रों के समान लगती

हैं। लहरों के उठने और परस्पर टकराने के कारण अनेक जलकण उड़ रहे हैं। यह जलकण मानों उसके आँसू हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानों सागर के हृदय को किसी ने ठेस पहुंचाई हो और इसी कारण वह अपनी आँखों से छलकते हुए आँसुओं को पोंछ रहा है।

दिनकर गिरि के पीछे अब
हिमकर था चढ़ा गगन में ;
कैलास प्रदोष प्रभा में
स्थिर बैठा किसी लगन में।[१२]

सूर्य पर्वत के पीछे छिप गया है - और आकाश पर चन्द्रमा चढ़ रहा है। संध्या की प्रभा में कैलास- शिखर शांत, सुस्थिर दिखाई पड़ता है, मानों वह किसी के ध्यान में मग्न हो। इसके साथ ही मानस में उस योगी का चित्र उभर आता है जो ध्यान में निमग्न समाधि लगाये बैठा है।

नगर का सुन्दर वर्णन इस प्रकार से करते हैं --

स्वर्ण-कलश-शोभित भवनों से लगे हुए उद्यान बने,
ऋजु-प्रशस्त, पथ बीच-बीच में, कहीं लता के कुंज घने ;
जिनमें दंपति समुद विहरते, प्यार भरे दे गलबाहीं,
गूँज रहे थे मधुप रसीले, मदिरा-मोद पराग सने।[१३]

ऐसे नगर का बिंब उभर कर आता है जिसके भवनों पर सोने के कलश लगे हुए हैं। भवनों से सटे हुए बगीचे बने हैं। उन बगीचों में सीधे और चौड़े मार्ग बने हुए हैं। कहीं- कहीं लताओं के घने कुंज हैं। इन कुंजों में पति- पत्नी

प्यार में डूबे एक दूसरे के गले में हाथ डाले आनन्दपूर्वक विहार कर रहे हैं। पास ही रसिक भौंरे पुष्पों का रसपान कर आनन्द मग्न गुँजार कर रहे हैं।

मधुर चाँदनी रात का सुन्दर दृश्य इस प्रकार से प्रस्तुत किया है -

कोमल कुसुमों की मधुर रात !
वह लाज भरी कलियाँ अनंत,
परिमल-घूँघट ढँक रहा दंत,
कँप- कँप चुप-चुप कर रही बात ।[१४]

मधुर चाँदनी रात फूलों से भरी हुई बहुत ही सुन्दर लग रही है। लज्जा से भरी हुई कलियाँ धीरे- धीरे चटक- चटक कर खुल रही हैं तथा उड़ते हुए पराग से पंखुडियां ढँक रही हैं। प्रमाता की चेतना में क्षणभर के लिए उन मुग्धाओं का चित्र अंकित हो जाता है जो लज्जावश घूंघट काढ़कर धीरे- धीरे आपस में बातें कर रही हैं।

वह मंजरियों का कानन
कुछ अरुण पीत हरियाली ;
प्रति पर्व सुमन संकुल थे
छिप गई उन्हीं में डाली ।[१५]

इस उदाहरण के को पढ़ते ही प्रकृति के हरे- भरे अंचल का सुन्दर चित्र मानस में उभर उठता है। जहाँ पर वृक्ष मंजरियों से लदे हुए हैं चारों तरफ केवल मंजरियाँ ही मंजरियाँ दिखायी देती हैं। वृक्ष की शाखायें फूलों से लदी पड़ी हैं जिसके कारण डालियाँ दिखाई तक नहीं देती। कितना सुन्दर बिम्ब कवि ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

(२) श्रावण बिंब :

यह बिंब सबसे सर्वोत्कृष्ट बिंब माना जाता है क्योंकि इसमें संक्षेप में पूरी कलात्मकता के साथ कथ्य को उपस्थित किया जाता है। इनकी शक्ति शब्दों के नाद सौन्दर्य पर निर्भर करती है।

प्रसाद जी ने विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का अंकन अपने काव्य में किया है। जैसे कोयल की काकली, पपीहा की पी-पी, नदियों की कल-कल की ध्वनि, झरने का झर- झर बहना, भ्रमर की गुंजार, बादलों की गरजन, पत्तों की मर्मर इत्यादि। जहाँ भी इन ध्वनियों का वर्णन हुआ है वहीं पर श्रावण बिंब का विधान हुआ है। प्रसाद जी के कुछ श्रावण बिंब द्रष्टव्य हैं --

प्रसाद जी को कोकिल बहुत ही प्रिय है। वह इसे सौंदर्य का प्रतीक मानते हैं। उन्होंने इसे `बसंत का दूत` सम्बोधन दिया है। निम्न उदाहरण में `कूक` से कोयल की ध्वनि का बिंब उभरता है --

प्यार भरे श्यामल अंबर में जब कोकिल की कूक अधीर,
नृत्य -शिथिल बिछली पड़ती है वहन कर रहा उसे समीर। [१६]

इसी प्रकार से पी- पी से पपीहा की ध्वनि का बिंब उभरता है -

डाल पर बोलता है पपीहा-
` हो भला प्राणधन, तुम कहीं ? - हा !
आ मिलो हो जहाँ।
पी ! कहाँ ? पी ! कहाँ ? [१७]

प्रसाद जी ने पक्षियों का समवेत कलरव करने का भी वर्णन किया है -

खग कुल किलकार रहे थे
कलहंस कर रहे कलरव ;
किन्नरियां बनीं प्रतिध्वनि
लेती थीं तानें अभिनव ।[१८]

इन पंक्तियों से पक्षियों का आनन्दित होकर कलरव करने का बिंब मानस में उपस्थित हो जाता है ।

भ्रमर की गुंजार का बिंब इस प्रकार से प्रस्तुत किया है -

शत शत मधुपों का गुंजन ;
भर उठा मनोहर नभ में ।[१९]

प्रसाद जी ने खड़खड़ाते पत्तों की ध्वनियों तक का भी सतर्कता के साथ अंकन किया है -

कोमल किसलय मर्मर रव से
जिसका जयघोष सुनाते हो ।[२०]

रात में चलती हुई पवन का वर्णन इस प्रकार से किया है -

किस दिगन्त रेखा में इतनी
संचित कर सिसकी-सी साँस,
यों समीर मिस हाँफ रही-सी
चली जा रही किसके पास ।[२१]

रात्रि बढ़ती जा रही है एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर बहती हुई पवन सिसकी-सी ध्वनि उत्पन्न कर रही है । यहाँ पर 'मिस' से चलती हुई हवा के बिंब की अवधारणा होती है ।

इन सब ध्वनियों के अतिरिक्त कुछ मानवीय ध्वनियाँ भी हैं जिनसे श्रावण बिंब की अवधारणा होती है जैसे- रोना, हँसना, सिसकी लेना इत्यादि। इस प्रकार के उदाहरण प्रसाद काव्य में मिलते हैं --

विकल खिलखिलाती है क्यों तू ?
इतनी हँसी न व्यर्थ बिखेर ;
तुहिन कणों, फेनिल लहरों में,
मच जावेगी फिर अन्धेर । [२२]

+ + +

इस शिथिल आह से खिंच कर
तुम आओगे, - आओगे
इस बढ़ी व्यथा को मेरी
रो रोकर अपनाओगे । [२३]

+ + +

अभी घायलों की सिसकी में
जाग रही थी मर्म व्यथा । [२४]

इन तीन उदाहरणों से खिलखिला कर हँसने का, रोने का और सिसकने का बिंब उभरता है।

इसके अतिरिक्त कुछ और भी ध्वनियाँ हैं जिनसे श्रावण बिंब की प्रतीति होती है जैसे -

कल-कलनादिनि बहती- बहती-
प्राणी दुख की गाथा कहती -
वरुणा द्रव होकर शान्ति -वारि शीतलता-सी भर लाई थी । [२५]

+ + +

निर्झर-सा झिर-झिर करता
माधवी- कुंज छाया में
चेतना बही जाती थी
हो मन्त्र- मुग्ध माया में।[२६]

\+ \+ \+

झंझा झकोर गर्जना था
बिजली थी, नीरद माला
पाकर इस शून्य हृदय को
सबने आ डेरा डाला।[२७]

इन उदाहरणों में कल- कल, झिर-झिर, गर्जन से शब्द बिंब की व्यंजना होती है।

इस प्रकार से प्रसाद जी ने अपने काव्य में विभिन्न प्रकार की नैसर्गिक तथा मानवीय ध्वनियों का वर्णन करते हुए श्रावण बिंबों के सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

(३) स्पर्श बिंब :

यह बिंब त्वचा से सम्बंधित होते हैं। कवि स्पर्श संवेदना के आधार पर स्पर्श बिंबों का निर्माण करता है। डॉ० कुमार विमल के अनुसार- 'स्पार्शिक बिंब प्राय: शारीरिक सौंदर्य चेतना या सन्निकर्ष -प्रधान रूप भावना से सम्बद्ध रहते हैं। अत: इनके द्वारा अधिकतर संस्पर्श त्वकचेतना या रूपात्मक संभार के भावों का मूर्तन किया जाता है। यों दृश्य कलाओं विशेषकर मूर्तिकला और चित्रकला में स्पार्शिक बिंबों के द्वारा सूक्ष्म अदृश्य भावों का भी वस्तुमूर्तन कर दिया जाता है।'[२८]

प्रसाद जी के काव्य में स्पर्श जनित अनुभूतियाँ जैसे- पुलक, रोमांच, सिहरन, कंपन, चुंबन, आलिंगन इत्यादि का पर्याप्त मात्रा में वर्णन हुआ है। उनके कुछ स्पर्श बिंब द्रष्टव्य हैं -

शीतल समीर आता है
कर पावन परस तुम्हारा
मैं सिहर उठा करता हूँ
बरसा कर आँसू - धारा।[२९]

प्रेमी को ऐसा प्रतीत होता है मानों शीतल पवन का झोंका प्रेमिका के शरीर को स्पर्श करके आया है। इस अनुभूति के कारण वह तत्काल सिहर उठता है। इन पंक्तियों में त्वचा के धर्म सिहरन का सुन्दर वर्णन होने के कारण स्पर्श बिंब की सुन्दर अवधारणा हुई है।

छूते थे मनु और कंटकित
होती थी वह बेली,
स्वस्थ व्यथा की लहरों - सी,
जो अंग लता थी फैली।[३०]

मनु ज्यों- ज्यों श्रद्धा को छूते हैं त्यों - त्यों बेलि के सदृश उसके शरीर में रोमांच के काँटे छा जाते हैं। इस उदाहरण में मनु के स्पर्श से श्रद्धा के शरीर में होनेवाले रोमांच की प्रतीति होती है।

सिसक-सिसक उठता है मन में, किस सुहाग के अपनेपन में
'छुई मुई' सा होता, हँसता, कितना है सुकुमार सँभाले कोई
कैसे प्यार।[३१]

'कुई-मुई' से स्पर्शजन्य संकोच का और 'सुकुमार' से त्वचा के कोमल धर्म का ज्ञान होता है।

आते ही कर स्पर्श गुदगुदाया मुझे,
खुली आँख आनन्द दृश्य दिखला दिया।
मनोवेग मधुकर- सा फिर तो गूँज के,
मधुर- मधुर स्वर्गीय गान गाने लगा।।[३२]

इस उदाहरण में 'गुदगुदाया' से पुलकायमान दशा का ज्ञान होता है।

हाथ में हाथ लिया मैंने
हुए वे सहसा शिथिल नितान्त।
मलय ताड़ित किसलय कोमल
हिल उठी उँगली, देखा ; प्रान्त।।[३३]

प्रिय पात्र के स्पर्श में इतनी मधुर मादकता होती है कि शरीर के रोम खड़े हो जाते हैं और शरीर रोमांचित होता हुआ शिथिल होने लगता है। इस उदाहरण में ऐसे ही स्पर्श बिंब का विधान हुआ है। हाथ में हाथ लेते ही नायिका का सहसा शिथिल होना एवं उँगली हिल उठने से उसकी कामातिशयता की प्रतीति होती है।

अचल हिमालय का शोभनतम
लता कलित शुचि सानु शरीर ;
निद्रा में सुख स्वप्न देखता
जैसे पुलकित हुआ अधीर।[३४]

हिमालय पर्वत का लताओं से भरा पवित्र शरीर अत्यन्त सुन्दर दिखाई

पड़ रहा है। उसकी ऊँची चोटियाँ रोमांच से खड़ी हुई रोमावली की भाँति प्रतीत होती हैं ऐसा लगता है मानो हिमालय निद्रा निमग्न कोई सुखमय स्वप्न देख रहा है, जिससे उसके रोंगटे प्रसन्नता के अनुभव से खड़े हो गये हैं। अचलता द्वारा निद्रालु स्थिति, उसके ऊपर खड़ी लताओं से रोमांच में खड़ी हुई रोमावली की तथा 'सुख स्वप्न देखता' से प्रेमिका के मादकता से भरे स्पर्श की प्रतीति होती है।

छिप गईं कहाँ छूकर वे
मलयज की मृदुल हिलोरें
क्यों घूम गई हैं आकर
करुणा- कटाक्ष की कोरें।[३५]

इन पंक्तियों से उस अतीतकाल की स्पर्शजन्य सुखद बिंब का अत्यन्त सुन्दर रूप मानस में उभर आता है।

शिरीष यह तुम लीन्हें अंक माँहि दामिनि सी।
गरजत पुलकि पसीजत धावत संग मानिनि सौं।[३६]

इन पंक्तियों से उस प्रेमी का बिंब उभरता है जो अपनी प्रेमिका के मादक स्पर्श से पुलकित होता हुआ पसीज रहा है।

है स्पर्श मलय के झिलमिल- सा
संज्ञा को और सुलाता है;
पुलकित हो आँखें बन्द किये
तन्द्रा को पास बुलाता है।[३७]

मनु ने अतीत में जिस नारी सुन्दरता का प्रत्यक्ष अनुभव किया है उसी का स्पर्श मलय पवन की मृदुलता के समान सुखकर प्रतीत हो रहा है। वह संपूर्ण व्यथा का हरण कर चेतना को सुला सा रहा है। वह बेसुध होता जा रहा है। उसकी आँखें झपक रही हैं और नींद सी आ रही है।

गिर रहीं पलकें, झुकी थी नासिका की नोक,
भ्रू लता थी कान तक चढ़ती रही बेरोक।
स्पर्श करने लगी लज्जा ललित कर्ण कपोल,
खिला पुलक कदम्ब-सा था भरा गद्गद बोल।[38]

मनु का प्रणय प्रामोद प्राप्त कर श्रद्धा की आँखें बन्द होने लगती हैं नासिका की नोक भी झुक जाती है और लज्जा के कारण उसके गालों और कानों पर लालिमा दौड़ जाती है। रोमांच से रोमावली भी खड़ी हो जाती है। कवि ने यहाँ पर स्पर्श बिंब का अति सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है।

(४) घ्राण बिंब :

घ्राण बिंब वह है जिसका आकलन घ्राण-संवेदना के द्वारा किया जाता है।

प्रसाद जी का गन्ध ज्ञान बहुत ही विशाल है। उन्होंने मधुर गंध को रस-भीनी कहा है और सुमन की गंध, मदिरा की गंध, मलयानिल की गन्ध के सुन्दर घ्राण बिंब प्रस्तुत किए हैं।

प्रसाद जी को फूलों से बहुत ही लगाव रहा है। जहाँ भी इनका वर्णन हुआ है प्रमाता की चेतना में उन फूलों से सम्बंधित गन्ध बिंब उभर आते हैं। प्रसाद जी के गंध बिंब द्रष्टव्य हैं -

Kalpana's

आ रही थी मदिर भीनी माधवी की गन्ध ;
पवन के घन घिरे पड़ते थे बने मधु अन्ध।[३९]

माधवी के फूल श्वेत होते हैं और बसंत ऋतु में खिलते हैं यह बहुत ही भीनी ऋ्तु०में सुगन्ध बिखेरते हैं। इस उदाहरण में माधवी के फूल की मदभरी गंध का बिंब उभर आता है।

जब शिरीष की मधुर गन्ध से मान-भरी मधु ऋतु रातें,
रूठ चली जाती रक्तिम- मुख, न सह जागरण की घातें।[४०]

शिरीष का फूल रात्रि में खिलता है तथा सूर्योदय से पूर्व वह मुरझाकर पृथ्वी पर झड़ जाता है। यहाँ पर कवि ने उसकी मधुर गन्ध का रमणीय बिंब प्रस्तुत किया है।

रात शतदलों की
मुद्रित मधुर गंध भीनी- भीनी रोम में
बहाती लावण्य - धारा।[४१]

इस उदाहरण में कमल की गंध का बोध होता है।

सुमन संकुलित भूमि रन्ध्र से
मधुर गन्ध उठती रस भीनी ;
वाष्प अदृश्य फुहारें इसमें
छूट रहे, रस बूँदें झीनीं।[४२]

फूलों से भरी भूमि के छिद्रों से भीनी- भीनी मीठी सुगन्ध निकलती रहती है। इस गंध से वाष्प के समान फुहारें छूटा करती हैं, जिससे इसकी सूक्ष्म से सूक्ष्म सूक्ष्म रस की बूँदें झरा करती हैं। इन पंक्तियों में गंध बिंब का सुन्दर विधान हुआ है।

Kalpana's

चन्दन वन की छाँह में, चलकर मन्द समीर,
अब मेरा निश्वास हो, करता किसे अधीर,
मधुप क्यों मंजु मुकुल से मिला ?
आज मधु पीले, यौवन बसन्त खिला ।[४३]

मानस में चन्दन वन की गन्ध का बिंब अंकित हो जाता है ।

रस जलकन मालती - मुकुल से-
जो मदमाते गन्ध विधुर थे ।[४४]

मानस में मालती की कलियों की गंध अवतीर्ण होती है ।

इनके अतिरिक्त प्रसाद जी ने आम्र मंजरियों की गंध[४५], सेवार काई की गंध[४६] और बसन्त के अन्य फूलों की गंध[४७] के भी सुन्दर बिंबों को प्रस्तुत किया है ।

प्रसाद जी ने अगरू की गंध का भी वर्णन किया है -

आती है शैलेय -अगरू की धूम-गन्ध आमोद भरी ।[४८]

इस उदाहरण में अगरू की लकड़ी की मीठी सुगन्ध का बिंब उभरता है ।

प्रसाद जी ने मलयानिल शब्द का बहुतायत से अपने काव्य में प्रयोग किया है । कावेरी नदी के दक्षिण में पश्चिमी घाट के हिस्से में चन्दन वन है । इस वन से आनेवाली वायु मलयानिल कहलाती है, जो सुगन्धि से पूर्ण होती है । इससे सम्बंधित बिंब भी प्रसाद काव्य में मिलते हैं ।

व्याकुल उस मधु सौरभ से
मलयानिल धीरे धीरे

निश्वास छोड़ जाता है
तब विरह तरंगिनी तीरे ।[४९]

इन पंक्तियों को पढ़ते ही मानस में मलयानिल की चन्दन गंध अवतीर्ण हो जाती है ।

सिहर भरी कँपती आवेंगी
मलयानिल की लहरें,
चुम्बन लेकर और जगाकर -
मानस नयन नलिन को ।[५०]

यहाँ पर मलय पवन की ठंडी, मन्द और सुगंधिपूर्ण लहरों का वर्णन किया गया है ।

अहा, अचानक किस मलयानिल ने तभी,
फूलों के सौरभ से पूरा लदा हुआ ।
आते ही कर स्पर्श गुदगुदाया मुझे,
खुली आँख आनन्द दृश्य दिखला दिया ।[५१]

यहाँ पर मलयानिल की गंध का बिंब उभर आता है ।

प्रसाद काव्य में मदिरा परक गंध बिंबों की भी व्यंजना हुई है ।उदाहरण प्रस्तुत है -

मंजुल स्वप्नों की विस्मृति में
मन का उन्माद निखरता ज्यों ;
सुरभित लहरों की छाया में
बुल्ले का विभव बिखरता ज्यों ।[५२]

Kalpana's

मदिरा को जब प्याले में उड़ेला जाता है तो उसमें बुलबुले बनने-बिगड़ने लगते हैं। चारों ओर मदिरा की गंध फैल जाती है। इन पंक्तियों को पढ़ते ही प्रमाता को मदिरा की गंध का आभास होने लगता है। निम्न उदाहरण में भी इसी प्रकार का गंध बिंब मानस में उभरता है -

काली आँखों में कितनी
यौवन के मद की लाली
मानिक- मदिरा से भर दी
किसने नीलम की प्याली।[५३]

मदिरा का पान करने पर मनुष्य की आँखें लाल हो जाती हैं उसकी नशीली लाल आँखों से ही मदिरा की गंध का बिंब उभर आता है।

विष प्याली जो पी ली थी
वह मदिरा बनी नयन में
सौन्दर्य पलक प्याले का
अब प्रेम बना जीवन में।[५४]

इसी प्रकार से निम्न पंक्तियों में 'क्षीण गंध' से अगरबत्ती की हल्की सी गंध का द्योतन होता है।

कृष्णागुरुवर्तिका
जल चुकी स्वर्ण पात्र के ही अभिमान में
एक धूम-रेखा मात्र शेष थी,
उस निस्पंद रंग मन्दिर के व्योम में
क्षीण - गन्ध निरवलंब।[५५]

Kalpana's

(५) रसना बिंब :

रसना बिंब वह है जिसकी संवेदना जिह्वा द्वारा मन ग्रहण करता है। प्रसाद काव्य में रसना बिंबों का विधान कम हुआ है। फिर भी कुछ उदाहरण मिलते हैं।

और सामने देखा उसने निज दृढ़ कर में चषक लिये,
मनु, वह क्रतुमय पुरूष। वही मुख संध्या की लालिमा पिये।
\+ \+ \+
इड़ा ढालती थी वह आसव, जिसकी बुझती प्यास नहीं,
तृषित कंठ को, पी-पी कर भी, जिसमें है विश्वास नहीं। ५६

श्रद्धा को स्वप्न में प्रतीत होता है जैसे मनु अपने हाथों में एक प्याला दृढ़ता से थामे हुए हैं। उसका मुख संध्या की लाली जैसी आभा से पूर्ण है। इड़ा मनु के प्याले में ऐसी मदिरा ढाल रही है जिसको पीकर कभी तृप्ति नहीं होती। प्यासा उसे पीकर फिर पीना चाहता है। उसे पीकर विश्वास ही नहीं होता कि उसने वस्तुत: पिया है। प्रमाता की चेतना में भी मदिरा के प्रति तृष्णा का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है -

पवन पी रहा था शब्दों को
निर्जनता की उखड़ी साँस। ५७

इसमें भी रसना बिंब का विधान हुआ है।

परिरम्भ कुम्भ की मदिरा
निश्वास मलय के झोंके
मुख-चन्द्र चाँदनी जल से
मैं उठता था मुँह धोके। ५८

इस उदाहरण में मदिरा का प्रसंग आने से मानस में हल्का सा रसना बिंब उभर आता है ।

उषा अरुण प्याला भर लाती
 सुरभित छाया के नीचे,
मेरा यौवन पीता सुख से
 अलसाई आँखें मीचे ।[५६]

इस उदाहरण में सुरभित मदिरा के आस्वादगत वैशिष्ट्य का बोध होता है ।

पुरोडाश के साथ सोम का
 पान लगे मनु करने,
लगे प्राण के रिक्त अंश को
 मादकता से भरने ।[६०]

सोम (मदिरा) और पुरोडाश (पशु का भुना हुआ मांस) का तो अपना ही स्वाद होता है । उपर्युक्त पंक्तियों में एक सुन्दर रसना बिंब की अवतारणा हुई है ।

मौलिक बिंब विधान की दृष्टि से प्रसाद काव्य में निम्न प्रकार के बिंबों का विधान हुआ है -

(१) शब्द बिंब
(२) वर्ण बिंब
(३) समानुभूतिक बिंब
(४) व्यंजना प्रवण सामासिक बिंब
(५) प्रस्तुत बिंब ।

(१) शब्द बिंब :

बिंब विधान में शब्द बिंब का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें संक्षेप में पूरी कलात्मकता के साथ कथ्य को उपस्थित किया जाता है। प्रसाद जी के काव्य में इस प्रकार के बिंबों का विधान हुआ है। उदाहरण देखिए -

धीरे- धीरे लहरों का दल,
तट से टकरा होता ओझल,
छप छप का होता शब्द विरल,
थर- थर कँप रहती दीप्ति तरल।[६१]

+ + +

मानस - सागर के तट पर
क्यों लोल लहर की घातें
कल - कल ध्वनि से हैं कहतीं
कुछ विस्मृत बीती बातें ?[६२]

+ + +

हा- हा कार हुआ क्रन्दन मय
कठिन कुलिश होते थे चूर ;
हुए दिगन्त वधिर, भीषण रव
बार - बार होता था क्रूर।[६३]

इन सब उदाहरणों में `छप- छप`, `कल- कल` और `हाहाकार` आदि शब्द स्पष्ट रूप से शब्द बिंब की व्यंजना करते हैं। प्रथम उदाहरण में `छप-छप` से सरिता की ध्वनि का ज्ञान होता है। उसी प्रकार दूसरे उदाहरण में `कल-कल`

से सागर में उठती हुई लहरों की ध्वनि और तीसरे उदाहरण में `हाहाकार` के द्वारा प्रलय की स्थिति का बोध होता है ।

इसी प्रकार निम्न उदाहरणों को पढ़ते ही `कंगन` और `नुपुर` की ध्वनि स्वयं ही कानों में गूँज उठती है -

कंकण क्वणित, रणित नूपुर थे,
हिलते थे छाती पर हार ;
मुखरित था कलरव, गीतों में
स्वर लय का होता अभिसार ।[६४]

+ + +

जब करता हूँ कभी प्रार्थना,
कर संकलित विचार,
तभी कामना के नूपुर की,
हो जाती झनकार ।[६५]

इसी प्रकार से निम्न उदाहरण में दूर बज रही वंशी की ध्वनि कानों में गूँज उठती है ।

श्वास पवन पर चढ़कर मेरे
दूरागत वंशी रव- सी,
गूँज उठीं तुम, विश्व कुहर में
दिव्य रागिनी अभिनव-सी ।[६६]

(२) वर्ण बिंब :

जहाँ विशिष्ट प्रकार के वर्णों की योजना और संचयन से अर्थवान तथा व्यंजक बिंबों का निर्माण होता है वहाँ पर वर्ण बिंब माना जाता है ।[६७]

प्रसाद जी के काव्य में इस प्रकार के बिंबों की सुन्दर योजना हुई है।

~~सुन्दर-सुहृद-संपत्ति-सुखद~~

सुन्दर सुहृद संपत्ति सुखदा सुंदरी ले साथ में
संसार यह सब सौंपना है चाहता तव हाथ में।[६८]

'स' वर्ण की अनेक बार आवृत्ति से वर्ण बिंब की स्थिति मानी जायेगी। प्रेम रंग बौरि हँसि हेरि लै-री मेरी लली
जिया ना जराव जरी जाय रही हौरी है।[६९]

'ज' वर्ण की बार- बार आवृत्ति से वर्ण बिंब की प्रतीति होती है।

(३) समानुभूतिक बिंब :

यह बिंब अधिकतर चाक्षुष ही हुआ करते हैं। इसमें कवि अपने व्यक्तित्व, स्वभाव, मनोदशा और भावना का आरोप बहिर्जगत या दृश्य जगत पर करता है। इसके रमणीय उदाहरण प्रसाद काव्य में द्रष्टव्य हैं -

नेत्र निमीलन करती मानो
प्रकृति प्रबुद्ध लगी होने।[७०]

+ + +

सुन्दर है अनुकूल- पवन, आनन्द में
झूम- झूमकर धीरे- धीरे चल रहा।[७१]

+ + +

पुलकित मलयानिल कूलों में,
भरता अंजलि था फूलों में।[७२]

+ + +

हेम कुंभ ले उषा सवेरे- भरती ढुलकाती सुख मेरे ।
मदिर ऊँघते रहते जब -जगकर रजनी भर तारा ।[७३]

इस उदाहरणों में नेत्र निमीलन, प्रबुद्ध होना, झूम-झूमकर धीरे-धीरे चलना, पुलकित होना, अंजलि भरना, निद्रा में ऊँघना, आँखें मूँदना और एकदम आँखें खोलना आदि चेतन क्रियाओं का अचेतन वस्तुओं पर आरोप किया गया है तथा जिसके कारण जड़ सृष्टि भी चेतन हो उठी है । अतः यहाँ पर समानुभूतिक बिंब की सुन्दर योजना हुई है ।

(४) व्यंजना प्रवण सामासिक बिंब :

इस प्रकार के बिंबों में कसावट या संक्षिप्तता होती है और गागर में सागर भरा जाता है अर्थात् कम से कम शब्दों के द्वारा अधिक से अधिक की व्यंजना की जाती है । प्रसाद जी की निम्न पंक्तियाँ इसी बिंब का उदाहरण हैं ।

संध्या की मिलन प्रतीक्षा
कह चलती कुछ मनमानी
उषा की रक्त निराशा
कर देती अन्त कहानी ।[७४]

यहाँ पर प्रसाद जी ने बहुत ही कम शब्दों में उषा की लालिमा का सुन्दर बिंब अंकित कर दिया है ।

उधर गरजती सिन्धु लहरियाँ
कुटिल काल के जालों- सी ;
चली आ रहीं फेन उगलती
फन फैलाये व्यालों - सी ।[७५]

इस उपरोक्त उदाहरण में प्रसाद जी ने लहर के भयंकर रूप का चित्रण किया है ।

किस दिगंत रेखा में इतनी
संचित कर सिसकी- सी साँस,
यों समीर मिस हाँफ रही -सी
चली जा रही किसके पास ।[७६]

इस उदाहरण में कवि ने बहुत ही कम शब्दों में रात्रि के शांत वातावरण का सुन्दर चित्र अंकित किया है ।

कहता दिगन्त से मलय पवन,
प्राची की लाज भरी चितवन -
है रात घूम आई मधुवन,
यह आलस की अँगराई है ।[७७]

उषा रात्रि भर अपने प्रिय के साथ मधुवन में अभिसार करती रही है । जिसके कारण उसमें लज्जा और शरीरांगों में आलस्य आ गया है । इन पंक्तियों में कवि ने उषा के शिथिल और परिश्रान्त रूप का ही सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है।

(५) प्रसृत बिंब :

यह बिंब सामासिक बिंब के बिल्कुल उल्टा होता है और इसमें शब्द का विस्तार अधिक होता है । इस प्रकार के बिंबों के द्वारा ही कवि को अमूर्त भावों के मूर्त्तविधान में विशेष सहयोग मिलता है । प्रसाद जी की निम्न पंक्तियाँ इसी बिंब का उदाहरण हैं -

कोमल किसलय के अंचल में
नन्हीं कलिका ज्यों छिपती- सी ;

गोधूली के धूमिल पट में
        दीपक के स्वर में छिपती-सी
मंजुल स्वप्नों की विस्मृति में
        मन का उन्माद निखरता ज्यों ;
सुरभित लहरों की छाया में
        बुल्ले का विभव बिखरता ज्यों ;
वैसी ही माया में लिपटी
        अधरों पर उँगली धरे हुए ।
माधव के सरस कुतूहल का
        आँखों में पानी भरे हुए ।
नीरव निशीथ में लतिका- सी
        तुम कौन आ रही हो बढ़ती ?
कोमल बाँहें फैलाये - सी
        आलिंगन का जादू पढ़ती ।[७८]

इस उदाहरण में प्रसाद जी ने `लज्जा` जैसे अमूर्त भाव का मूर्तीकरण अत्यन्त सुन्दर एवं सजीव रूप से करते हुए प्रसृत बिंब का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। अन्य आधारों पर भी बिंबों का एक वर्गीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है -

(१) सज्जात्मक बिंब

(२) उदात्त बिंब

(३) संवेदनात्मक बिंब

(४) वस्तु प्रधान बिंब

(५) घनात्मक बिंब

(६) विस्तार प्रधान बिंब

(७) नाद प्रधान बिंब

(१) सज्जात्मक बिंब :

जिस कविता में भी सज्जात्मक बिंबों का विधान होता है उसमें शिल्प पक्ष ही अधिक मुख्य होता है। शिल्प पक्ष को सजाना ही मानों इन बिंबों का मुख्य ध्येय होता है। सज्जात्मक बिंब को भी अलंकार की भाँति काव्य का शोभावर्द्धक धर्म माना जाता है। प्रसाद जी के काव्य में इस प्रकार के बिंबों के अनेक उदाहरण मिल जाते हैं।

तिर रही अतृप्ति जलधि में
नीलम की नाव निराली
काला- पानी वेला सी
है अंजन- रेखा काली।[७९]

इस उदाहरण में प्रसाद जी ने आँख के सौन्दर्य को प्रस्तुत करने के लिए 'नीलम की नाव' और 'काला पानी वेला' का प्रयोग किया है। आँख का अति सुन्दर बिंब मानस में उभरता है। इसी प्रकार निम्न उदाहरण भी इसी वर्ग में आता है -

बाँधा था विधु को किसने
इन काली जंजीरों से
मणि वाले फणियों का मुख
क्यों भरा हुआ हीरों से ?[८०]

इस उदाहरण में 'विधु' मुख का 'काली जंजीर' काली-काली केश राशि का, 'मणि वाले फणि' अधर का, और 'हीरा' दाँत का प्रतीक है। इस प्रकार से प्रसाद जी ने यहाँ लाक्षणिक शैली का प्रयोग करते हुए रूप सौंदर्य का सुन्दर चित्र अंकित किया है।

उदात्त बिंब :

किसी असाधारण भाव या विषय को चित्रित करने के लिए उदात्त बिंबों का विधान होता है। इसके द्वारा भाषा में ओजस्विता आ जाती है। प्रसाद जी की निम्न पंक्तियाँ उदात्त बिंब का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं -

उधर गरजती सिन्धु लहरियाँ
कुटिल काल के जालों - सी ;
चली आ रहीं फेन उगलती
फन फैलाये व्यालों - सी।
सबल तरंगाघातों से उस
क्रुद्ध सिन्धु के, विचलित- सी ;
व्यस्त महा कच्छप-सी धरणी
ऊभ-चूम थी विकलित - सी।[८१]

यहाँ पर कवि का मुख्य उद्देश्य प्रलय के भयंकर दृश्य को चित्रित करना है। `कुटिल काल के जालों` और `फेन उगलती फन फैलाये व्यालों`, से यह बिंब पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है।

इसी प्रकार `कामायनी` की निम्न पंक्तियाँ भी उदात्त बिंब का ही सुन्दर उदाहरण है -

अन्धकार के अट्टहास सी ;
मुखरित सतत चिरन्तन सत्य।[८२]

(३) संवेदनात्मक बिंब :

इस वर्ग के अन्तर्गत मात्र संवेदना के आधार पर निर्मित भावात्मक बिंब आ जाते हैं। छायावादी कवियों ने इस प्रकार के बिंबों का अत्यधिक प्रयोग किया है। चूँकि प्रसाद जी भी छायावादी कवि हैं इसलिए उनके काव्य में भी इस प्रकार के बिंब पाये जाते हैं। उदाहरण देखिए -

अभिलाषाओं की करवट
फिर सुप्त व्यथा का जगना
सुख का सपना हो जाना
भींगी पलकों का लगना।[८३]

उपरोक्त उदाहरण को पढ़ते हुए कोई स्पष्ट चित्र या बिंब हमारे सामने प्रस्तुत नहीं होता क्योंकि 'अभिलाषाओं की करवट' और 'सुप्त व्यथा का जगना' का सम्बंध सूक्ष्म आन्तरिक अनुभूतियों से है। उदाहरण को पढ़ने के पश्चात इसका अर्थ पाठक की समझ में आ जाता है। उसी के आधार पर एक धुँधला सा बिंब उसके मानस में उभर आता है। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण देखिए :-

ले चल वहाँ भुलावा देकर,
मेरे नाविक! धीरे धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी,
अंबर के कानों में गहरी -
निश्छल प्रेम - कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।

जहाँ साँझ-सी जीवन छाया,
ढीले अपनी कोमल काया,
नील नयन से ढुलकाती हो,
ताराओं की पाँति घनी रे । [८४]

उपरोक्त उदाहरण को पढ़ने के पश्चात अंबर के कानों में निश्छल प्रेम कथा कहने वाली सागर- लहरी और साँझ - सी फैलाने वाली जीवन-छाया का कोई स्पष्ट चित्र या बिंब नहीं उभरता । परन्तु पंक्तियों को पढ़ने के पश्चात एक हल्का सा बिंब अन्त:करण में अवश्य उपस्थित हो जाता है ।

(४) वस्तु प्रधान बिंब :

इस प्रकार के बिंबों को मनोलोक से बाहर की दुनिया के प्रत्यक्षीकरण से ग्रहण किया जाता है । इन बिंबों का सम्बन्ध समाज और जीवन की वास्तविकता से होता है । प्रसाद जी की निम्न पंक्तियों में वस्तु प्रधान बिंब ही है -

केतकी गर्भ- सा पीला मुँह
आँखों में आलस भरा स्नेह ;
कुछ कृशता नई लजीली थी
कम्पित लतिका-सी लिये देह । [८५]

यहाँ पर प्रसाद जी ने गर्भवती श्रद्धा का सुन्दर चित्र अंकित किया है ।

(५) घनात्मक बिंब :

घनात्मक बिंबों का मुख्य आधार संवेदना और भावात्मकता होती है । बिंब का सौंदर्य चित्रण की कुशलता पर टिका होता है । इनकी कुछ विशेषताएँ होती हैं जैसे भावों का संयम, इकहरी अनुभूतियाँ और दृश्य आकारों की प्रधानता इत्यादि ।

'कामायनी' की निम्न पंक्तियाँ घनात्मक बिंब से ओत-प्रोत हैं -

उषा सुनहले तीर बरसती
जय-लक्ष्मी सी उदित हुई ;
उधर पराजित कालरात्रि भी
जल में अन्तर्निहित हुई ।[८६]

इस उदाहरण में प्रसाद जी ने रात्रि के समाप्त होने और उषा के उदित होने का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है। 'जयलक्ष्मी' और 'पराजित' से भी कवि के भाव पूर्णतया स्पष्ट हो गये हैं। 'आँसू' की निम्न पंक्तियाँ भी इसी वर्ग में आती हैं -

अम्बर असीम अन्तर में
चंचल चपला से आकर
अब इन्द्र धनुष सी आभा
तुम छोड़ गये हो जाकर ।[८७]

(६) विस्तार प्रधान बिंब :

विस्तार प्रधान बिंबों में अर्थ के विस्तार या फैलाव का संकेत मिलता है। इस प्रकार के बिंब आख्यानपरक या प्रबंध काव्य में अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। प्रसाद जी के काव्य में भी कहीं-कहीं इन बिंबों की सुन्दर छटा न देखने को मिलती है -

जीवन-निशीथ के अन्धकार !
तू नील तुहिन जल-निधि बन कर फैला है कितना बार पार
कितनी चेतनता की किरणें हैं डूब रहीं ये निर्विकार ।[८८]

यहाँ पर प्रसाद जी ने जीवन में व्याप्त निराशा की स्थिति का चित्रण रात्रि के अन्धकार के विस्तार का चित्रण करके किया है।

(७) नाद प्रधान बिंब :

नाद बिंब शब्दों के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनियों से नि:सृत होता है। प्रसाद जी के काव्य में तो इस प्रकार के बिंब बहुतायत से प्राप्त होते हैं -

निर्झर-सा झिर-झिर करता
माधवी-कुंज छाया में।[८६]

इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण देखिए -

नभ-हृदय में घिरी मेघमाला
चंचला कर रही है उजाला।।
देख लूँ, हो कहाँ?
पी! कहाँ? पी! कहाँ?[६०]

'झिर-झिर' से झरना की ध्वनि और पी! कहाँ? पी! कहाँ से पपीहे की ध्वनि का बिंब उभरता है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि प्रसाद जी के काव्य में बिंबों की सुन्दर योजना हुई है। उन्होंने बिंबों का इतना सुन्दर बोध कराया है कि परिस्थिति एवं परिवेश पूर्ण रूप से मानस में भ उभर कर प्रत्यक्ष हो उठते हैं।

--

सन्दर्भ :

१- डॉ० केदारनाथ सिंह : आधुनिक हिन्दी कविता में बिंब विधान, पृ० १७०

२- डॉ० महेन्द्रनाथ राय : नवजागरण और छायावाद, पृ० ३१३

३- प्रसाद, कामायनी, पृ० ५३

४- प्रसाद : झरना, पृ० २६-२७

५- प्रसाद : लहर, पृ० २६

६- प्रसाद : झरना, पृ० ४६

७- प्रसाद : आँसू, पृ० १६

८- वही, पृ० २८

९- प्रसाद, कामायनी, पृ० २५७

१०- प्रसाद, आँसू, पृ० २१

११- प्रसाद, लहर, पृ० २२

१२- प्रसाद, कामायनी, पृ० २६१

१३- वही, पृ० १७५

१४- प्रसाद, लहर, पृ० २७

१५- प्रसाद, कामायनी, पृ० २६१

१६- प्रसाद, लहर, पृ० ४३

१७- प्रसाद : झरना, पृ० ४७

१८- प्रसाद, कामायनी, पृ० २६२

१९- वही, पृ० २६२

२०- वही, पृ० १०१

२१- वही, पृ० ४६

२२- वही, पृ० ४७

२३

२३- प्रसाद : आँसू, पृ० ५२

२४- प्रसाद, कामायनी, पृ० २००

२५- प्रसाद, लहर, पृ० १४

२६- प्रसाद : आँसू, पृ० १८

२७- वही, पृ० १५

२८- डॉ० कुमार विमल : सौंदर्यशास्त्र के तत्त्व, पृ० २३८

२९- प्रसाद : आँसू, पृ० ३६

३०- प्रसाद : कामायनी, पृ० १२३

३१- प्रसाद : राज्यश्री, पृ० ४२

३२- प्रसाद , झरना, पृ० १७

३३- वही, पृ० ७०

३४- प्रसाद, कामायनी, पृ० ३८

३५- प्रसाद : आँसू, पृ० २९

३६- प्रसाद : चित्राधार, पृ० १६१

३७- प्रसाद, कामायनी, पृ० ७१

३८- वही, पृ० ९३

३९- वही, पृ० ८९

४०- वही, पृ० १७२

४१- प्रसाद : लहर, पृ० ५९-६०

४२- प्रसाद : कामायनी, पृ० २४३

४३- प्रसाद : विशाख, पृ० २६

४४- प्रसाद : लहर, पृ० २९

४५- प्रसाद : आँधी, पृ० ९८

४६- प्रसाद : तितली, पृ० २७२

४७- प्रसाद : एक घूँट, पृ० ७

४८- प्रसाद : कामायनी, पृ० १७६

४९- प्रसाद : आँसू, पृ० ३१

५०- प्रसाद : लहर, पृ० ४०

५१- प्रसाद : झरना, पृ० १७

५२- प्रसाद : कामायनी, पृ० ९७

५३- प्रसाद : आँसू, पृ० २१

५४- वही, पृ० ३२

५५- प्रसाद : लहर, पृ० ७२

५६- प्रसाद : कामायनी, पृ० १७६

५७- वही, पृ० २९

५८- प्रसाद : आँसू, पृ० २७

५९- प्रसाद : कामायनी, पृ० २१०

६०- वही, पृ० १९६

६१- वही, पृ० २२८

६२- प्रसाद : आँसू, पृ० ८

६३- प्रसाद : कामायनी, पृ० २४

६४- वही, पृ० २२

६५- प्रसाद : झरना, पृ० १६

६६- प्रसाद : कामायनी, पृ० २१३

६७- डॉ० कुमार विमल: छायावाद का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन, पृ० १७५

६८- प्रसाद : काननकुसुम, पृ० ३०

६९- प्रसाद : चित्राधार, पृ० १८२

७०- प्रसाद : कामायनी, पृ० ३४

७१- प्रसाद : करूणालय, पृ० १२

७२- प्रसाद : लहर, पृ० १४

७३- प्रसाद : चन्द्रगुप्त, पृ० ८६

७४- प्रसाद : आँसू, पृ० ५२

७५- प्रसाद : कामायनी, पृ० २५

७६- वही, पृ० ४६

७७- प्रसाद : लहर, पृ० २२

७८- प्रसाद : कामायनी, पृ० ६७

७९- प्रसाद : आँसू, पृ० २२

८०- वही, पृ० २१

८१- प्रसाद : कामायनी, पृ० २५

८२- वही, पृ० २८

८३- प्रसाद : आँसू, पृ० ११

८४- प्रसाद : लहर, पृ० १६

८५- प्रसाद : कामायनी, पृ० १३८

८६- वही, पृ० ३३

८७- प्रसाद : आँसू, पृ० ३४

८८- प्रसाद : कामायनी, पृ० १५३

८९- प्रसाद : आँसू, पृ० १८

९०- प्रसाद : झरना, पृ० ४७

--